ज्ञान सूर्य की आई जो किरण
खिल गया सूरजमुखी सा मन
दिल में उठी अब खुशी की तरंग
प्यार की है उसमें मीठी सुगंध
मन नाचे जैसे मयूर मग्न
मिटी दिल की सोयी अगन
चमक उठे प्यासे नयन
मिली बिछड़े बाप की शरण
ज्ञान सूर्य की आई जो किरण
छूटे कई जन्मों की भटकन
चली मुरली की मधुर पवन
दिल को मिला चैन और सुकून
84 जन्मों की मिटी थकन
आया नया जोश और जूनून
हो गये ख़त्म सब शिकवे गिले
बाप ने जो लगया अपने गले
ज्ञान सूर्य की आई जो किरण

ॐ शांति।